



हिन्दी

هندي

رسالاتانِ موجَّهَاتٍ في الزَّكَاةِ وَالصَّيَّامِ

# ज़कात और रोज़े के बारे में दो संक्षिप्त पुस्तिकाएं



आदरणीय शैख  
अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़  
उनपर अल्लाह की कृपा हो!

جـمـعـيـة خـدـمـة المـحـتـوى الإـسـلـامـي بـالـلـغـات ، ١٤٤٧ هـ

بن باز ، عبدالعزيز  
رسالتان موجزتان في الزكاة والصيام - هندي. / بن باز ،  
عبدالعزيز .- الرياض ، ١٤٤٧ هـ

.. سم .. ص ؟

رقم الإيداع: ١٤٤٧/١٢٣٢٦  
ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٥١٧-١٠٣-٨

رسائلانِ موجزَتَانِ فِي الزَّكَةِ وَالصِّيَامِ

ज्ञाता और रोज़े के बारे में दो संक्षिप्त  
पुस्तिकाएं

سَمَاحَةُ الشَّيْخِ

عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بَازٍ

رَحْمَةُ اللَّهِ

आदरणीय शैख

अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज  
उनपर अल्लाह की कृपा हो!

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## पहली पुस्तिका

### ज़कात पर महत्वपूर्ण शोध के संबंध में

सारी प्रशंसा और स्तुति केवल अल्लाह के लिए है, तथा अल्लाह की ओर से दरूद और सलाम (दया और शांति) अवतरित हो अल्लाह के अंतिम संदेषा पर, तथा उनके परिजनों और साथियों पर, तत्पश्चात :

इन शब्दों को लिखने का कारण लोगों को ज़कात के दायित्व के बारे में नसीहत करना और याद दिलाना है, जिसके बारे में बहुत से मुसलमान लापरवाही करते हैं और निर्धारित तरीके से इसको नहीं निकालते हैं, जबकि इसका बहुत महत्व है और यह इस्लाम के उन पाँच स्तंभों में से एक है, जिनके बिना इसकी संरचना दुरुस्त नहीं हो सकती। जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है :

بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةٍ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ، وَحَجَّ الْبَيْتِ۔

"इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर रखी गई है : इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, नमाज स्थापित करना, ज़कात देना, रमजान के रोज़े रखना और अल्लाह के पवित्र घर (काबा) का

हज करना।<sup>(1)</sup> सहीह बुखारी एवं सहीह मुस्लिम।

मुसलमानों पर ज़कात अनिवार्य करना इस्लाम के सबसे प्रमुख गुणों में से एक है तथा यह सिद्ध करता है कि इस्लाम अपने अनुयायियों के तमाम मामलों पर ध्यान देता है। और ऐसा इसलिए है क्योंकि इसके अनेक लाभ हैं और गरीब मुसलमानों को इसकी अत्यंत आवश्यकता है।

ज़कात के अनेक और ढेर सारे लाभ हैं जिनमें से कुछ ये हैं :

1- अमीर और गरीब के बीच स्नेह और मोहब्बत के बंधन को मजबूत करना, क्योंकि आत्माएं स्वाभाविक रूप से उन लोगों से प्रेम करने की इच्छुक होती हैं जो उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं।

2- आत्मा को शुद्ध और परिष्कृत करना, तथा उसे लालच और कंजूसी के गुणों से दूर रखना, जैसा कि पवित्र कुरआन ने सर्वशक्तिमान अल्लाह के इस कथन में इसकी ओर इशारा किया है :

(خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطْهِرُهُمْ وَتُرْكِيَّهُمْ بِهَا...)

आप उनके मालों में से दान लें, जिसके साथ आप उन्हें पवित्र और पाक-साफ करें... [सूरह अल-तौबा : 103]

3- मुसलमानों को ज़रूरतमंदों के प्रति उदारता, दया और करुणा के गुण का आदी और अभ्यस्त बनाना।

4- अल्लाह से बरकत, वृद्धि और बदला प्राप्त करना, जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा है :

(...وَمَا آنَفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ)

---

<sup>(1)</sup> सहीह बुखारी : 8, सहीह मुस्लिम : 161

...और तुम जो चीज़ भी खर्च करते हो, तो वह उसकी जगह और देता है। और वह सबसे उत्तम जीविका देने वाला है। [सूरह अल-सबा : 39]

सहीह हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है : अल्लाह कहता है :

『يَا ابْنَ آدَمَ أَنِّقْ نُفْقَ عَلَيْكَ...』.

"ऐ आदम के बेटे, तू खर्च कर, हम तुझ पर खर्च करेंगे..."<sup>(1)</sup>

इनके अलावा ज़कात के अनेक और बहुत सारे लाभ हैं।

तथा जो ज़कात देने में कंजूसी करे अथवा इसे निकालने में कोताही करे, उसके संबंध में कड़ी चेतावनी आई है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :

﴿...وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الْذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرُهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يُحْمَى عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكَوَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَذَا مَا كَنَزْتُمْ لَا نَفْسٌ كُمْ فَدُوْقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُونَ ﴿٣٥﴾﴾

...तथा जो लोग सोना-चाँदी एकत्र करके रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते, तो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी दे दो। जिस दिन उसे जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे उनके माथों और उनके पहलुओं और उनकी पीठों को दागा जाएगा। (कहा जाएगा:) यही है, जो तुमने अपने लिए कोश बनाया था। तो (अब) उसका स्वाद चखो जो तुम कोश बनाया करते थे। [सूरह अल-तौबा : 34-35]

अतः प्रत्येक वह धन जिसकी ज़कात अदा नहीं की गई हो, वह कन्ज

<sup>(1)</sup> सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या 993।

(कोष, खजाना) है, जिसके द्वारा उसका मालिक क्रियामत के दिन अज्ञाब दिया जाएगा, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित सहीह हदीस इसको प्रमाणित करती है, आप ने फ़रमाया :

«مَا مِنْ صَاحِبٍ ذَهَبٍ وَلَا فِضَّةٍ لَا يُؤَدِّي حَقَّهَا إِلَّا إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ صُفْحَتْ لَهُ صَفَائِحُ مِنْ نَارٍ؛ فَأَحْمَمِي عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ، فَيُكْوَى بِهَا جَنْبُهُ وَجَبِينُهُ وَظَهُورُهُ كُلُّمَا بَرَدَتْ أُعِيدَتْ لَهُ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةً حَتَّى يُقْضَى بَيْنَ الْعِبَادِ، فَيُرَى سَبِيلُهُ: إِمَّا إِلَى الْجَنَّةِ، وَإِمَّا إِلَى النَّارِ».

"जो भी सोना या चाँदी रखने वाला व्यक्ति अपने उस धन का हक्क (जकात) अदा नहीं करता, उसके लिए क्रियामत के दिन आग की तरिक्तियाँ तैयार की जाएँगी, और उन्हें जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उनसे उसके पहलू उसकी पेशानी (ललाट) और पीठ को दागा जाएगा। जब-जब तरिक्तियाँ ठंडी हो जाएँगी, उन्हें दोबारा गर्माया जाएगा। यह अज्ञाब एक ऐसे दिन में होगा, जिसकी लम्बाई पचास हजार साल के बराबर होगी। (यह सिलसिला जारी रहेगा) यहाँ तक कि बंदों के बीच फ़ैसला कर दिया जाए और फिर (अज्ञाब में गिरफ़तार व्यक्ति) जन्नत या जहन्नम की ओर जाने वाला अपना रास्ता देख लेगा।"<sup>(1)</sup>

इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन ऊँटों, गौवंश और भेड़-बकरियों के स्वामी का उल्लेख किया, जो उनकी ज़कात अदा नहीं

<sup>(1)</sup> सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 9871

करता, और यह सूचना दी कि क्रियामत के दिन उन्हें उन्हीं जानवरों के द्वारा यातना दी जाएगी।

सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :

«مَنْ آتَاهُ اللَّهُ مَا لَا فَلَمْ يُؤَدِّ زَكَاتُهُ مُثْلٌ لَهُ شُجَاعًا أَقْرَعَ لَهُ زَبِيتَانِ يُطْوِقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِلِهْرِمَتَيْهِ (يَعْنِي شِدْقَيْهِ)، ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا مَالُكُ، أَنَا كَنْزُكَ»، ثُمَّ تَلَّ النَّبِيُّ ﷺ قَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا أَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَهُمْ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُواْ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ...﴾

"जिस व्यक्ति को अल्लाह ने माल दिया और उसने उसकी ज़कात नहीं अदा की, तो (क्रियामत के दिन) उसका माल एक गंजे साँप के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जिसके दो काले निशान होंगे, वह क्रियामत के दिन उसके गले में डाल दिया जाएगा, फिर वह उसके दोनों जबड़ों को पकड़ेगा और कहेगा: 'मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ।' फिर आपने यह आयत पढ़ी: 'जिन लोगों को अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से नवाज़ा और फिर वह कंजूसी से काम लेते हैं, वह इस ख़याल में न रहें कि यह कंजूसी उनके हक में अच्छी है, नहीं यह उनके हक में निहायत बुरी है जो कुछ वह अपनी कंजूसी से जमा कर रहे हैं, वही क्रियामत के दिन उनके गले का तौक़ बन जाएगा...'।" [सूरह आल-ए-इमरान: 180]।<sup>(1)</sup>

<sup>(1)</sup> इसे बुखारी ने हदीस संख्या (1338) के अंतर्गत रिवायत किया है।

ज़कात चार प्रकार की वस्तुओं में अनिवार्य है : भूमि से उत्पन्न होने वाली फ़सलों और फलों में, चरने वाले पालतू पशुओं (ऊँट, गाय और भेड़-बकरियों) में, सोना और चाँदी में, तथा व्यापार के सामान में।

और इन चारों प्रकार की वस्तुओं के लिए एक निश्चित निसाब (ज़कात अनिवार्य होने के लिए धन की नियत मात्रा) निर्धारित है, इससे कम पर ज़कात अनिवार्य नहीं होती। अनाज और फलों का निसाब पाँच वसक है। एक वसक साठ साअू के बराबर होता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साअू के अनुसार। यह खजूर, किशमिश, गेहूँ, चावल, जौ आदि पर लागू होता है। कुल मिलाकर यह तीन सौ साअू बनता है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साअू के अनुसार। तथा साअू एक ऐसा माप है, जो सामान्य कद-काठी वाले व्यक्ति की दोनों भरी हुई हथेलियों की चार बार की मात्रा (चार लप) के बराबर होता है।

तथा इस में दसवां हिस्सा अनिवार्य है, यदि खजूर और फसलों की सिंचाई बिना किसी खर्च के हो, जैसे वर्षा, नदियों, या बहते झारनों आदि के द्वारा।

किंतु यदि सिंचाई खर्च और मेहनत के साथ की जाए, जैसे कुएँ से पानी निकालने वाले उपकरण या पानी खींचने वाली मशीनें आदि के माध्यम से, तो इसमें केवल दसवां हिस्सा का आधा (अर्थात्: बीसवां हिस्सा) अनिवार्य है, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस में प्रमाणित है।

जहाँ तक ऊँट, गाय और भेड़-बकरियों में से चरने वालों के निसाब (निश्चित मात्रा) का सवाल है, तो इसका विस्तृत विवरण नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीसों में मौजूद है, तथा जो व्यक्ति इसे जानने की इच्छा रखता है, वह इसके बारे में विद्वानों से प्रश्न कर सकता है। यदि संक्षिप्तता का उद्देश्य न होता, तो लाभ की पूर्णता के लिए हम इसका विस्तार

से उल्लेख करते।

जहाँ तक चाँदी के निसाब की बात है, तो यह एक सौ चालीस मिसकाल (595 ग्राम) है, जिसका मूल्य सऊदी अरब के अरबी दिरहम में छप्पन (56) रियाल है।

और सोने का निसाब बीस मिसकाल है, जिसका मूल्य सऊदी गिनी में ग्यारह गिनी और एक गिनी के सात भागों में से तीन भाग के बराबर है, और ग्राम में यह बानवे (92) ग्राम है। सोने-चाँदी दोनों में, या इनमें से किसी एक में निसाब पूरा होने पर और साल पूरा हो जाने पर दसवें का चौथाई (अर्थात्: ढाई प्रतिशत) ज़कात अनिवार्य है।

मुनाफ़ा मूल धन का अनुसरण करता है, अतः उसे नए साल की आवश्यकता नहीं होती, जैसे कि चरने वले पशुओं की संतान भी अपने मूल के अंतर्गत है, और यदि मूल धन निसाब की मात्रा को पहुँच गया हो, तो उसे नए साल की आवश्यकता नहीं होती।

तथा सोने और चाँदी के समान ही आजकल प्रचलित नकद मुद्रा भी मानी जाती है, चाहे उसे दिरहम, दीनार, डॉलर, या किसी अन्य नाम से पुकारा जाए। यदि इसकी मूल्य राशि चाँदी या सोने के निसाब तक पहुँच जाए और उस पर एक साल गुजर जाए, तो उस पर ज़कात अनिवार्य है।

और नकद मुद्रा की श्रेणी में महिलाओं के सोने या चाँदी के गहने भी आते हैं, विशेषकर जब वे निसाब तक पहुँच जाएँ, और उनपर एक साल गुजर जाए, तो विद्वानों के सब से सटीक कथन के अनुसार, उनपर ज़कात अनिवार्य हो जाती है, भले ही वे उपयोग के लिए तैयार किए गए हों या मँगनी के रूप में देने के लिए हों। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निम्नांकित कथन की व्यापकता से यही सिद्ध होता है :

«مَا مِنْ صَاحِبِ ذَهَبٍ أَوْ فِضَّةٍ لَا يُؤْدِي زَكَاتَهَا إِلَّا إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ صُفْحَتْ لَهُ صَفَائِحُ مِنْ نَارٍ».

"जो भी सोना या चाँदी रखने वाला व्यक्ति अपने उस धन का हक (जकात) अदा नहीं करता, उसके लिए क्रियामत के दिन आग की तख्तयाँ तैयार की जाएँगी।"<sup>(1)</sup> पूर्वोल्लेखित हदीस के अंत तक।

तथा इसलिए भी कि यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित है कि आप ने एक औरत के हाथों में दो सोने के कंगन देखे, तो आपने फरमाया :

«أَتَعْطِيْنَ زَكَةَ هَذَا؟». قَالَتْ: لَا. قَالَ: «أَيْسُرُكِ أَنْ يُسَوْرَكِ اللَّهُ بِهِمَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ سِوَارَيْنِ مِنْ نَارٍ!». فَأَفْتَهُمَا، وَقَالَتْ: «هُمَا لِلَّهِ وَلِرَسُولِهِ».

"क्या तुम इनकी जकात अदा करती हो?" उसने कहा : नहीं। तो आप ने फरमाया : "क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा कि क्रियामत के दिन अल्लाह तुम्हारे हाथों में आग के दो कंगन पहनाए?" तो उसने उन्हें उतार डाला और कहा : "ये अल्लाह और उसके रसूल के लिए हैं।"<sup>(2)</sup>

और यह प्रमाणित है कि उम्मे सलमा रजियल्लाहु अन्हा सोने से बना हुआ एक विशेष आभूषण पहना करती थीं। उन्होंने पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल, क्या यह खज्जाना है? तो आप ने फरमाया :

(1) सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 9871

(2) इसे सुनन अबू दावूद, हदीस संख्या: 1563 तथा सुनन नसई, हदीस संख्या: 2270, में हसन सनद के साथ रिवायत किया गया है।

『مَا بَلَغَ أَنْ يُزَكَّى فَزُكَّى فَلَيْسَ بِكَنْزٍ』.

"जो संपत्ति ज्ञात की सीमा तक पहुँच जाए और उसकी ज्ञात अदा कर दी जाए, तो वह कन्ज (खज्जाना) नहीं है।"<sup>(1)</sup>

और इस अर्थ की अन्य हदीसें भी मौजूद हैं।

जहाँ तक व्यापारिक वस्तुओं अर्थात् विक्रय के लिए तैयार माल, का सवाल है, तो उनका मूल्यांकन साल के अंत में किया जाएगा और उनकी कीमत के दसवें भाग का एक चौथाई (द्वाई प्रतिशत) ज्ञात के रूप में निकाला जाएगा, चाहे उनकी कीमत उनके वास्तविक मूल्य के बराबर हो, अधिक हो, या कम हो, जैसा कि समुरा रजियल्लाहु अन्हु की हदीस में उल्लेखित है, वह कहते हैं :

『كَانَ رَسُولُ اللَّهِ يَأْمُرُنَا أَنْ نُخْرِجَ الصَّدَقَةَ مِنَ الَّذِي نُعِدُهُ لِلْبَيْعِ』.

"अल्लाह के सूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें आदेश देते थे कि हम उस माल से ज्ञात निकालें जिसे हम बिक्री के लिए तैयार रखते थे।"<sup>(2)</sup>

तथा इसी में वे जमीनें, इमारतें, गाड़ियाँ, पानी उठाने वाले उपकरण और अन्य प्रकार की वस्तुएँ शामिल हैं जो बिक्री के लिए तैयार रखी गई हों।

जहाँ तक उन इमारतों का संबंध है जो किराए पर देने के लिए बनाई गई हैं, न कि बिक्री के लिए, तो उनकी ज्ञात केवल उनके किराए पर अनिवार्य

(1) सुनन अबू दावूद, हदीस संख्या : 1564।

(2) सुनन अबू दावूद, हदीस संख्या : 1562।

होती है, यदि उस पर एक साल गुजर जाए, लेकिन स्वयं उस इमारत पर ज़कात नहीं है, क्योंकि वह बिक्री के लिए तैयार नहीं की गई है। इसी प्रकार, निजी उपयोग की गाड़ियों और टैक्सियों पर भी ज़कात नहीं है, यदि वे बिक्री के लिए तैयार न की गई हों, बल्कि स्वामी ने उन्हें अपने उपयोग के लिए खरीदा हो।

और यदि किराए की टैक्सी चलाने वाले चालक या किसी अन्य व्यक्ति के पास इतनी नकदी जमा हो जाए जो निसाब की मात्रा तक पहुँचती हो, तो उसपर एक साल बीतने के बाद ज़कात अनिवार्य होगी, चाहे वह उसे खर्च के लिए, शादी के लिए, संपत्ति खरीदने के लिए, क्रांत चुकाने के लिए या किसी अन्य उद्देश्य के लिए बचा रहा हो, क्योंकि इस संदर्भ में ज़कात की अनिवार्यता पर शर्ई प्रमाण व्यापक रूप से लागू होते हैं।

और विद्वानों के सब से सटीक कथन के अनुसार, क्रांत ज़कात की अनिवार्यता को समाप्त नहीं करता, जैसा कि उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है।

इसी प्रकार, अनाथों और मानसिक रूप से असमर्थ (पागल) व्यक्तियों की संपत्ति पर भी ज़कात अनिवार्य है, जब वह निसाब तक पहुँच जाए और उसपर एक साल गुजर जाए, जैसा कि जुम्हूर (अधिकांश) विद्वानों का मत है। उनके संरक्षकों की यह जिम्मेदारी है कि वे साल पूरा होने पर उनके लिए नीयत करके ज़कात अदा करें। इसके शर्ई प्रमाण व्यापक हैं, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस कथन में वर्णित है, जब आप ने मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन के लोगों के पास भेजा था :

«إِنَّ اللَّهَ افْتَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً فِي أَمْوَالِهِمْ تُؤْخَذُ مِنْ أَغْنِيَائِهِمْ»

وَتَرَدُّ فِي فُقَرَائِهِمْ ۝ .

"निस्संदेह अल्लाह ने उनके माल में सदका (जकात) को अनिवार्य किया है, जिसे उनके अमीरों से लिया जाएगा और उनके ग़रीबों को लौटाया जाएगा।"<sup>(1)</sup>

जकात अल्लाह का अधिकार है अतः, इसे ऐसे व्यक्ति को देना जो इस का हकदार न हो, उचित नहीं है, न ही इसका उद्देश्य किसी निजी लाभ को प्राप्त करना या किसी हानि को रोकना होना चाहिए, एवं न ही इसे अपने माल की सुरक्षा के लिए या निंदा को रोकने के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए, बल्कि, मुसलमान पर यह अनिवार्य है कि वह अपनी जकात उसे दे जो इसका वास्तविक हकदार हो, अन्य किसी उद्देश्य के लिए नहीं। साथ ही, इसे खुश दिली से (प्रसन्न चित्त हो कर) और अल्लाह के लिए इखलास (निष्ठा) के साथ देना चाहिए, ताकि उसकी जिम्मेदारी पूरी हो जाए, और वह महान इनाम और बदले का पात्र बन सके।

अल्लाह ने अपनी पवित्र किताब (कुरआन) में जकात के पात्र लोगों की श्रेणियों को स्पष्ट कर दिया है, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

إِنَّمَا الْصَّدَقَةُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَكِينِ وَالْعَمِيلِينَ عَلَيْهَا  
وَالْمُؤْلَفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْعَرِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأَبْنِ  
السَّبِيلِ فَرِيَضَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٦﴾

जकात तो केवल फ़कीरों और मिस्कीनों के लिए और उसपर नियुक्त

<sup>(1)</sup> सहीह बुखारी, हदीस संख्या : 1395, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या : 191

कार्यकर्ताओं के लिए तथा उनके लिए है जिनके दिलों को परचाना अभीष्ट हो, और दास मुक्त करने में और क़र्जदारों एवं तावान भरने वालों में और अल्लाह के मार्ग में तथा यात्रियों के लिए है। यह अल्लाह की ओर से एक दायित्व है और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, पूर्ण हिक्मत वाला है। [सूह अल-तौबा : 60]।

और इस आयत को इन महान नामों 'अलीम' (सब कुछ जानने वाला) और 'हकीम' (प्रज्ञा में अद्वितीय) के साथ समाप्त करने में अल्लाह का अपने बंदों के लिए यह संकेत है कि वह अपने बंदों की सभी अवस्थाओं को जानता है कि : कौन ज़कात का हक्कदार है और कौन नहीं, तथा वह अपनी शरीअत और क़द्र (निर्णय) में अत्यंत प्रज्ञावान है, जो चीज़ों को उनके उपयुक्त स्थानों पर रखता है, चाहे कुछ लोग उसकी हिक्मत के रहस्यों को न समझ पाएं, ताकि अल्लाह के बंदों को उसकी शरीअत के प्रति संतोष मिले, और वे उसके निर्णय के प्रति समर्पित रहें।

अल्लाह ही से हम सवाल करते हैं कि वह हमको और तमाम मुसलमानों को, उसके धर्म को समझने, उसके साथ अपने व्यवहार में ईमानदार होने, उसे जो अच्छा लगे उसमें प्रतिस्पर्धा करने और उसके क्रोध के कारणों से दूर रहने के लिए, सुयोग प्रदान करे। वह सब कुछ सुनने वाला, समीप है!

और दरूद तथा सलाम (दया और शांति) अवतरित हो अल्लाह के बंदे और संदेष्टा पर, तथा उनके परिजनों और साथियों पर।

वैज्ञानिक अनुसंधान,

इफ्ता, आह्वान और मार्गदर्शन विभागों के अध्यक्ष :

आदरणीय शैख : अब्दुल अज़्जीज़ बिन अबदुल्लाह बिन बाज़

\*\*\*

## दूसरी पुस्तिका

रमज़ान के रोज़े एवं क्रियामुल्लैल (रात में जाग कर नमाज़ पढ़ने) की प्रधानता के संबंध में तथा साथ में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण नियमों का उल्लेख, जो कई लोगों पर छिप हो सकते हैं।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ द्वारा उन समस्त मुस्लिमों के नाम संदेश, जिन्हें यह प्राप्त हो : अल्लाह मेरा तथा उनका मार्गदर्शन ईमान के पथ पर करे, तथा मुझे और उन्हें कुरआन और सुन्नत के ज्ञान में प्रवीणता प्रदान करो आमीन!

सलामुल्लाहि अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, (आप पर शांति, अल्लाह की दया एवं बरकतें उतरें।)

तत्पश्चात् : यह एक संक्षिप्त नसीहत (उपदेश) है जो रमज़ान के रोज़े और उसके क्रियाम (तरावीह, तहज्जुद) के महत्व, इस महीने में नेकी के कार्यों में जल्दी करने की फ़ज़ीलत, तथा कुछ महत्वपूर्ण नियमों के वर्णन से संबंधित है, जो अनेक लोगों पर छिप हो सकते हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सिद्ध है कि आप रमज़ान के महीने के आगमन पर अपने साथियों को शुभ सूचना देते थे और उन्हें बताते थे कि यह ऐसा महीना है जिसमें दया के द्वार एवं स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते हैं, तथा नर्क के द्वार बंद कर दिए जाते हैं, और शैतानों को ज़नजीरों में ज़कड़ दिया जाता है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे :

إِذَا كَانَتْ أَوَّلُ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فُتُّحْتُ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ فَلَمْ يُغْلَقْ مِنْهَا بَابٌ، وَغُلْقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ فَلَمْ يُفْتَحْ مِنْهَا بَابٌ، وَصُفِّدَتِ الشَّيَاطِينُ، وَيُنَادِي مُنَادٍ: يَا بَاغِيَ الْخَيْرِ أَقْبِلْ، وَيَا بَاغِيَ الشَّرِّ أَقْبِرْ. وَلِلَّهِ عُتْقَاءُ مِنَ النَّارِ، وَذَلِكَ كُلُّ لَيْلَةٍ».

"जब रमज़ान की प्रथम रात्रि आती है, तो स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते हैं, और उनमें से कोई भी द्वार अवरुद्ध नहीं किया जाता तथा नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं, और उनमें से कोई भी द्वार उन्मुक्त नहीं किया जाता। शैतानों को जंजीरों में आबद्ध कर दिया जाता है, और एक उद्घोषक उच्च स्वर में पुकारता है: 'हे सत्कर्मों के अभिलाषी, आगे बढ़ो, तथा हे दुष्कर्मों के इच्छुक, विराम लो।' तथा प्रत्येक रात्रि में, अल्लाह नरक की अग्नि से कुछ व्यक्तियों को मुक्ति प्रदान करता है।"

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

«جَاءَكُمْ شَهْرُ رَمَضَانَ شَهْرُ بَرَكَةٍ يَغْشَاكُمُ اللَّهُ فِيهِ: فَيُنْزِلُ الرَّحْمَةَ وَيُحْكُمُ الْخَطَايَا، وَيَسْتَجِيبُ الدُّعَاءَ، يَنْظُرُ اللَّهُ إِلَى تَنافِسِكُمْ فِيهِ فَمَنْ يَأْتِي بِكُمْ مَلَائِكَتَهُ؛ فَأَرُوا اللَّهَ مِنْ أَنفُسِكُمْ خَيْرًا؛ فَإِنَّ الشَّقِيقَيْ مَنْ حُرِمَ فِيهِ رَحْمَةَ اللَّهِ».

"तुम्हरे पास रमज़ान का महीना आया है, जो कि बरकतों (कल्याणों) से परिपूर्ण है। इस महीने में अल्लाह अपनी कृपा तुम पर बरसाता है, इस प्रकार कि : वह अपनी रहमतें उतारता है, गुनाहों को माफ़ करता है, और

दुआओं को स्वीकार करता है, अल्लाह इस महीने में नेक कार्यों में तुम्हारी प्रतिस्पर्धा को देखता है, तथा अपने फरिश्तों के समक्ष तुम्हारी प्रशंसा करता है। इसलिए, अल्लाह को अपनी ओर से केवल भलाई दिखाओ, क्योंकि वह व्यक्ति दुर्भाग्यशाली है, जो इस महीने में अल्लाह की रहमत से वंचित रहता है।"

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

«مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفْرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ، وَمَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفْرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ، وَمَنْ قَامَ لِيَلَةَ الْقَدْرِ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفْرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ».

"जो कोई रमजान के रोजे रखता है ईमान और अल्लाह से प्रतिफल की उम्मीद के साथ, उसके पहले किए गए (सँगीरा) गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। जो कोई रमजान की रातों में तरावीह की नमाज ईमान और सवाब (पुण्य) की उम्मीद के साथ अदा करता है, उसके भी पहले किए गए (सँगीरा) गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं। और जो कोई शबे-कङ्ड्र (लैलतुल-कङ्ड्र) में ईमान और सवाब की उम्मीद के साथ तरावीह की नमाज पढ़ता है, उसके भी पूर्व के (छोटे) गुनाह क्षमा कर दिए जाते हैं।"

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं :

«يَقُولُ اللَّهُ: كُلُّ عَمَلٍ ابْنِ آدَمَ لَهُ الْحَسَنَةُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِمِائَةِ ضِعْفٍ إِلَّا الصِّيَامُ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ؛ تَرَكَ شَهْوَتَهُ وَطَعَامَهُ وَشَرَابَهُ مِنْ أَجْلِي. لِلصَّائِمِ فَرْحَةٌ عِنْدَ فِطْرِهِ»

وَفَرْحَةٌ عِنْدَ لِقَاءِ رَبِّهِ. وَلَخُلُوفٌ فِي الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللَّهِ مِنْ رِيحٍ  
الْمِسْكِ.»

"अल्लाह कहता है : आदम के पुत्र का हर कार्य उसके लिए है, एक नेकी दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक बढ़ाई जाती है। लेकिन रोज़ा विशेष रूप से मेरे लिए है, और मैं ही उसका प्रतिदान दूंगा, उसने मेरी खातिर अपनी वासना, भोजन और पेय को त्याग दिया। रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ हैं : एक खुशी उसके इफ्तार के समय, और दूसरी खुशी जब वह अपने रब से मिलेगा। और रोज़ेदार के मुँह की बदबू अल्लाह के निकट कस्तूरी के सुगंध से भी अधिक प्रिय है।"

रमज़ान के रोज़े और उसके क़ियाम (रात्रि में तरावीह की नमाज़) की फ़ज़ीलत तथा स्वयं रोज़े की प्रधानता को प्रमाणित करने वाली बहुतेरी हदीसें मौजूद हैं।

इसलिए, एक मोमिन को चाहिए कि वह इस अवसर का लाभ उठाए, जो अल्लाह ने उसे रमज़ान का महीना पाने के रूप में प्रदान किया है, उसे नेकी के कार्यों की ओर तेजी करनी चाहिए, बुराइयों से बचना चाहिए, और उन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, जिन्हें अल्लाह ने उस पर फ़र्ज़ किया है। विशेषकर, पांचों नमाज़ों का पालन करे, क्योंकि वे इस्लाम का स्तंभ हैं, और शहादतैन के बाद सबसे महान फ़र्ज़ हैं। प्रत्येक मुसलमान पुरुष और महिला पर यह अनिवार्य है कि वे उन्हें उनके समय पर, खुशूअ (विनप्रता) एवं इत्मीनान (तल्लीनता) के साथ अदा करें।

और पुरुषों के लिए इसका सबसे महत्वपूर्ण दायित्व यह है कि वे इसे जमात के साथ अल्लाह के घरों (मस्जिदों) में अदा करें, जिनके विषय में

अल्लाह ने आदेश दिया है कि उन्हें ऊँचा किया जाए तथा उनमें उसके नाम का स्मरण किया जाए, जैसाकि अल्लाह तआला का फ़रमान है :

(وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَأَئُثُوا الْزَّكُوَةَ وَأَرْكَعُوا مَعَ الْرَّكِعَيْنَ ﴿٤٣﴾)

तथा नमाज़ कायम करो और ज़कात दो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। [सूरह अल-बक़रा : 43]।

एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

(حَفِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَوَةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ

(قَنْتِيْنَ ﴿٣٨﴾)

सब नमाज़ों का और (विशेषकर) बीच की नमाज़ (अस्त्र) का ध्यान रखो तथा अल्लाह के लिए आज्ञाकारी होकर (विनयपूर्वक) खड़े रहो। [सूरह अल-बक़रा : 238]।

एक अन्य स्थान में कहा है :

(قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ① الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ حَسِيْعُونَ ②)

निश्चय सफल हो गए ईमान वाले। जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाने वाले हैं। [सूरह अल-मोमिनून : 1-2]

आगे फ़रमाया :

(وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ⑨ أُولَئِكَ هُمُ الْوَرِثُونَ ⑩)

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَلِدُونَ ⑪)

तथा जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं। वही लोग वारिस हैं। जो फिरदौस के वारिस होंगे, वे उसमें सदैव रहेंगे। [सूरह अल-मोमिनून : 9-11]।

तथा अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है :

«الْعَهْدُ الَّذِي بَيَّنَنَا وَبَيَّنُهُمُ الصَّلَاةُ فَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ كَفَرَ» .

"वह वचन, जो हमारे और उनके बीच है, नमाज़ है, अतः जिसने इसे छोड़ दिया, उसने कुफ़्र किया।"

और नमाज़ के बाद सबसे महत्वपूर्ण अनिवार्य कर्तव्य ज़कात अदा करना है, जैसा कि अल्लाह ने कहा है :

«وَمَا أُمْرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا أَللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الْدِينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَوَةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيمَةِ ﴿٥﴾

हालाँकि उन्हें केवल यही आदेश दिया गया था कि वे अल्लाह के लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए, एकाग्र होकर, उसकी उपासना करें, तथा नमाज़ अदा करें और ज़कात दें और यही सीधा धर्म है। [सूरह अल-बय्हिना : 5], एक अन्य स्थान में महान अल्लाह ने कहा है :

«وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَءَاتُوا الزَّكَوَةَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦﴾

तथा नमाज़ क्रायम करो और ज़कात दो तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो, ताकि तुमपर दया की जाए। [सूरह अल-नूर : 56]।

महान अल्लाह की पुस्तक और उसके महान रसूल की सुन्नत दोनों यह स्पष्ट करती हैं कि जो व्यक्ति अपने माल की ज़कात अदा नहीं करता, उसे क्रियामत के दिन उसी माल के द्वारा दंडित किया जाएगा।

तथा नमाज़ और ज़कात के बाद सबसे महत्वपूर्ण कार्य रमज़ान का रोज़ा रखना है, जो इस्लाम के पाँच स्तंभों में से एक है, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की निम्नलिखित वाणी में उल्लेखित है :

بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَىٰ خَمْسٍ: شَهَادَةٌ أَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ، وَحَجَّ الْبَيْتِ۔

"इस्लाम पांच स्तंभों पर आधारित है : यह गवाही देना कि अल्लाह के अलावा कोई सत्य पूज्य नहीं है, और मुहम्मद अल्लाह के रसूल (दूत) हैं, नमाज की स्थापना करना, ज़कात देना, रमजान में रोज़ा रखना और बैतुल्लाह (काबा) का हज करना।"

और एक मुसलमान पर यह अनिवार्य है कि वह अपने रोजे और क्रियाम को उन बातों और कर्मों से सुरक्षित रखे जिन्हें अल्लाह ने उस पर हराम ठहराया है, क्योंकि रोजे का उद्देश्य केवल भोजन, पेय और अन्य रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों का त्याग करना नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला की आज्ञा का पालन करना, उसके हुरूमात (निषिद्ध की हुई वस्तुओं) का सम्मान करना, अपनी इच्छाओं के खिलाफ आत्मा का संघर्ष करना और उसे उन चीज़ों से संयमित रखना है जिन्हें अल्लाह ने हराम किया है। और इसी कारण से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह बात प्रमाणित है कि आपने फ़रमाया :

الصَّيَامُ جُنَاحٌ، فَإِذَا كَانَ يَوْمُ صَوْمٍ أَحَدِكُمْ فَلَا يَرْفَثُ وَلَا يَصْبَخُ، فَإِنْ سَابَهُ أَحَدٌ أَوْ قَاتَلَهُ فَلَيَقُولُ: إِنِّي صَائِمٌ۔

"रोजा ढाल है, अतः रोजेदार अश्लील एवं अज्ञानता वाली बातें न करो।

यदि कोई उसके साथ गाली गलौज करे या लड़ने-भिड़ने लगे, तो कह दे कि मैं रोज़े से हूँ।"

एक अन्य सही हहीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम ने फ़रमाया :

«مَنْ لَمْ يَدْعُ قَوْلَ الزُّورِ وَالْعَمَلِ بِهِ وَالْجَهْلَ فَلَيْسَ لِلَّهِ حَاجَةً فِي أَنْ يَدْعَ طَعَامَهُ وَشَرَابَهُ».

"जो झूठ बोलना, झूठ पर आधारित कार्य करना, और जहालत न छोड़े, उसके खाना-पीना छोड़े रहने की अल्लाह को कोई जरूरत नहीं है।"

इन दलीलों एवं इन जैसे अन्य प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि रोज़ेदार पर यह अनिवार्य है कि वह उन सभी चीज़ों से बचे, जिन्हें अल्लाह ने उसपर हराम किया है, और उन सभी कर्तव्यों को पूरा करे, जिन्हें अल्लाह ने उसपर फ़र्ज़ ठहराया है। इस प्रकार, उसके लिए अल्लाह की माफी, जहन्नम से मुक्ति, तथा रोज़े और क्रियाम (रात की नमाज़-ए-तरावीह) की स्वीकृति की आशा की जा सकती है।

और कुछ ऐसी बातें हैं जो कई लोगों से छिपी रह सकती हैं :

इनमें से एक यह है कि : एक मुसलमान के लिए यह अनिवार्य है कि वह रोज़ा, ईमान और सवाब (पुण्य) की उम्मीद के साथ रखे, न कि दिखावे, यशगान, लोगों के अनुकरण में, एवं न ही अपने परिवार या अपने गाँव के लोगों का अनुसरण करते हुए, बल्कि, उसे रोज़ा रखने के लिए प्रेरित करने वाला एकमात्र कारण यह होना चाहिए कि उसका यह ईमान (विश्वास) हो कि अल्लाह ने उसे यह आदेश दिया है, और उसे इसके बदले में अपने रब से सवाब की उम्मीद होनी चाहिए, इसी प्रकार, रमज़ान में तरावीह की नमाज़

भी एक मुसलमान को ईमान और सवाब की आशा के साथ अदा करनी चाहिए, न कि किसी अन्य कारण से, और इसी संदर्भ में अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम ने फ़रमाया है :

«مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفْرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ، وَمَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفْرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ، وَمَنْ قَدِرَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفْرَلَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ.»

"जो कोई रमज़ान के रोजे ईमान और अल्लाह से सवाब (पुण्य) की उम्मीद के साथ रखता है, उसके पहले किए गए (स़ारीरा) गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, और जो कोई रमज़ान की रातों में तरावीह की नमाज ईमान और सवाब की उम्मीद के साथ अदा करता है, उसके भी पहले किए गए (स़ारीरा) गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं, और जो कोई शबे-कद्र (लैलतुल-कद्र) में ईमान और सवाब की उम्मीद के साथ तरावीह की नमाज अदा करता है, उसके भी पूर्व के (छोटे) गुनाह क्षमा कर दिए जाते हैं।"

उन मामलों में से, जिनका हुक्म कुछ लोगों पर छिपा रह सकता है, यह भी है कि : रोजेदार को यदि कोई चोट लग जाए, नकसीर फूट जाए, उल्टी आ जाए, अथवा पानी या पेट्रोल बिना उसकी मर्जी के उसके गले में चला जाए, तो इन सभी चीजों से रोज़ा नहीं टूटता, लेकिन जिसने जान-बूझकर उल्टी की, उसका रोज़ा टूट जाएगा, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम ने फ़रमाया है :

«مَنْ ذَرَعَهُ الْقَيْءُ فَلَا قَضَاءَ عَلَيْهِ، وَمَنِ اسْتَقَاءَ فَعَلَيْهِ الْقَضَاءُ.»

"जिसे अनायास उल्टी हो जाए, तो उस पर रोजे की क़ज़ा (पूर्ति) नहीं है,

लेकिन जिसने जान-बूझकर उल्टी की, उसपर क़ज़ा करना अनिवार्य है।"

और इसी में यह भी शामिल है कि :यदि रोज़ेदार से जनाबत (अपवित्रता) का गुस्त फ़ज़्र के निकलने (भोर होने) तक टल जाए, या यदि किसी महिला को मासिक धर्म या प्रसव के बाद की शुद्धता फ़ज़्र के पहले प्राप्त हो, तो उसपर रोज़ा रखना अनिवार्य है, तथा उसके लिए यह अनुमति है कि वह गुस्त (स्नान) को फ़ज़्र के बाद तक विलंबित कर सकती है, किंतु वह इसे सूरज के उगने तक विलंबित नहीं कर सकती, बल्कि, उसपर अनिवार्य है कि वह सूरज के उगने से पहले गुस्त कर ले और फ़ज़्र की नमाज अदा कर ले। और इसी तरह, जनाबत (अपवित्रता) की स्थिति वाले व्यक्ति के लिए गुस्त को सूर्य के उगने तक विलंबित करना उचित नहीं है, बल्कि, उसपर अनिवार्य है कि वह सूरज उगने से पहले गुस्त करे और फ़ज़्र की नमाज अदा करे, तथा पुरुषों को अनिवार्य रूप से इस कार्य में शीघ्रता करनी चाहिए ताकि वे फ़ज़्र की नमाज जमात के साथ अदा कर सकें।

तथा उन मामलों में से जो रोज़े को नहीं तोड़ते हैं : रक्त परीक्षण करना और पोषण के सिवा किसी और उद्देश्य से दी जाने वाली सुझायाँ लेना (अर्थात्: शक्तिवर्धक सूझायों के अतिरिक्त अन्य सूझायाँ लेना), लेकिन यदि संभव हो, तो इसे रात तक टाल देना अधिक उपयुक्त और सावधानीपूर्वक होगा, जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है :

«دَعْ مَا يَرِيُكَ إِلَى مَا لَا يَرِيُكَ».

"जिस कार्य में तुम्हें संदेह हो, उसे छोड़कर वह कार्य करो, जिसमें तुम्हें संदेह न हो।"

तथा अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है :

«مَنِ اتَّقَى الشُّبُهَاتِ فَقَدِ اسْتَبَرَأَ لِدِينِهِ وَعَرَضَهُ». ۲۴

"जो अस्पष्ट चीजों से बचा, उसने अपने धर्म और प्रतिष्ठा की रक्षा कर ली।"

तथा उन मामलों में से जिनका हुक्म कुछ लोगों के लिए अस्पष्ट हो सकता है : नमाज में इत्मीनान (तल्लीनता) की कमी है, चाहे वह फर्ज हो या नफ़ल। अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीसों ने यह स्पष्ट किया है कि इत्मीनान नमाज़ के स्तंभों में से एक है, और इसके बिना नमाज़ मान्य नहीं होती। इत्मीनान का अर्थ है नमाज़ में स्थिरता, विनम्रता और बिना जल्दबाज़ी के इसे अदा करना, ताकि हर हड्डी अपनी जगह पर लौट आए। अनेक लोग रमज़ान में तरावीह की नमाज़ ऐसे अदा करते हैं कि वे इसे समझते नहीं और न ही इसे इत्मीनान के साथ अदा करते हैं, बल्कि वे इसे जल्दबाज़ी और अव्यवस्थित तरीके से अदा करते हैं। इस प्रकार की नमाज़ अमान्य है, और इसे अदा करने वाला पापी है, उसे इसका पुण्य नहीं मिलेगा।

एवं उन मामलों में से जो कुछ लोगों के लिए अस्पष्ट हो सकते हैं : यह धारणा रखना है कि तरावीह की नमाज़ बीस रक़अत से कम नहीं हो सकती, साथ ही यह धारणा कि इसे ग्यारह या तेरह रक़अत से अधिक नहीं बढ़ाया जा सकता। यह सभी धारणाएँ सत्य से परे हैं, बल्कि यह एक ऐसा भ्रम है जो प्रमाणों के विपरीत है।

अल्लाह के रसूल سल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रमाणित सहीह हदीसें इस बात को साबित करती हैं कि रात की नमाज़ (तरावीह) में व्यापकता है। इसकी ऐसी कोई निश्चित सीमा नहीं है जिसे लांघना अनुचित हो, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह साबित है कि आप रात की नमाज़

में ग्यारह रक्खत अदा करते थे, कभी-कभी तेरह रक्खत, तथा कभी-कभी इससे भी कम, रमजान में एवं रमजान के अतिरिक्त अन्य समयों में भी, तथा जब आप से रात की नमाज के बारे में पूछा गया, तो आप ने फरमाया :

«مَنْتَى مَشْنَى، فَإِذَا خَشِيَ أَحَدُكُمُ الصُّبْحَ صَلَّى رَكْعَةً وَاحِدَةً تُوَتِّرُ لَهُ مَا قَدْ صَلَّى».

"दो-दो रक्खत पढ़ो, फिर जब तुम में से किसी को सुबह होने का भय होने लगे, तो वह एक रक्खत पढ़े, यह एक रक्खत उसके द्वारा पढ़ी गई नमाजों को विषम (बेजोड़) बना देगी।" सहीह बुखारी एवं सहीह मुस्लिम।

और किसी निश्चित रक्खत की सीमा नहीं निर्धारित की, न रमजान में और न अन्य समय में। इसी कारण, सहाबा ने उमर रजियल्लाहु अन्हु के युग में कुछ अवसरों पर तेईस रक्खत नमाज अदा की, और कुछ अवसरों पर ग्यारह रक्खत। यह सब उमर रजियल्लाहु अन्हु और उनके समय के सहाबा से प्रमाणित है।

और कुछ सलफ़ (पूर्वज) रमजान में छत्तीस रक्खत नमाज अदा करते थे, और तीन रक्खत वित्र पढ़ते थे, जबकि कुछ लोग इकतालीस रक्खत पढ़ते थे। इस बात का उल्लेख शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्यह रहिमहुल्लाह एवं अन्य विद्वानों ने किया है। इसके साथ ही, उन्होंने यह भी बताया है कि इस मामले में व्यापकता है, और उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि जो व्यक्ति लंबी किरात (कुरआन का पाठ), रुकूअ और सज्दा करता है, उसके लिए रक्खतों की संख्या कम रखना बेहतर है, और जो व्यक्ति हल्की किरात, रुकूअ और सज्दा करता है, वह रक्खतों की संख्या बढ़ा ले। यही उनके कथन का अर्थ है, अल्लाह उन पर दया करे।

जो व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर विचार करेगा, वह यह जान लेगा कि इन सभी मामलों में सबसे उत्तम यह है कि रमजान या अन्य समयों में ग्यारह रक्उत या तेरह रक्उत नमाज अदा की जाए, क्योंकि यह अधिकांश हालतों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कार्य के अनुरूप है, और यह नमाजियों के लिए अधिक आसान भी है, तथा खुशूअ (विनप्रता) एवं तुमानीनत (इत्मीमान, तल्लीनता) के अधिक निकट है, और जो इससे अधिक करे, उसपर कोई हर्ज नहीं और न ही इसमें कोई अप्रियता की बात है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया।

और जो व्यक्ति रमजान में तरावीह की नमाज इमाम के साथ अदा करे, उसके लिए बेहतर यह है कि वह इमाम के साथ ही नमाज पूरी करे (और बीच में छोड़ कर न जाए), क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है:

«إِنَّ الرَّجُلَ إِذَا قَامَ مَعَ الْإِمَامِ حَتَّىٰ يَنْصَرِفَ كَتَبَ اللَّهُ لَهُ قِيَامٌ لِّيْلَةٍ».

"जो इमाम के साथ उसके सलाम फेरने तक खड़ा रहे (अर्थात : तरावीह की नमाज में आखिर तक इमाम के साथ रहे), उसके लिए रात भर तरावीह की नमाज पढ़ने का सवाब लिख दिया जाता है।"

इस पवित्र महीने में सभी मुसलमानों के लिए यह धर्म सम्मत है कि वे विभिन्न प्रकार की इबादतों को अंजाम देने में परिश्रम करें, जैसे : नफ्ल नमाज अदा करना, कुरआन को ध्यान और समझ के साथ पढ़ना, तथा अधिकाधिक तस्बीह (सुब्हानल्लाह कहना), तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह कहना), तहमीद (अल्हम्दुलिल्लाह कहना), तकबीर (अल्लाहु अकबर कहना), और

इस्तिफार (क्षमा याचना) करना, शरीअत के अनुसार दुआएँ करना, भलाई का आदेश देना, बुराई से रोकना, अल्लाह की ओर बुलाना, गरीबों एवं निर्धनों की मदद करना, माता-पिता की सेवा में प्रयास करना, रिश्तेदारों के साथ संबंध बनाए रखना, पड़ोसी का सम्मान करना, बीमार की अयादत (देखभाल) करना और अन्य प्रकार की भलाइयों में जुटे रहना, क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूर्व में उल्लेखित हदीस में यह फ़रमाया है:

بِنْظُرِ اللَّهِ إِلَى تَنَافِسِكُمْ فِيهِ، فَيُبَاهِي بِكُمْ مَلَائِكَتَهُ؛ فَأَرُوا اللَّهَ مِنْ أَنْفُسِكُمْ خَيْرًا، فَإِنَّ الشَّقِيقَ مِنْ حُرِمَ فِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ۔

"अल्लाह तुम्हारे इस (नेकी के) मुकाबले को देखता है और तुम्हारे कारण अपने फ़रिश्तों के सामने फ़ख्त करता है, इसलिए अल्लाह को अपनी ओर से अच्छाई दिखाओ, क्योंकि वह बड़ा अभागा है जिसे इस महीने में अल्लाह की रहमत से वंचित कर दिया गया।"

तथा क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने फ़रमाया है :

مَنْ تَقَرَّبَ فِيهِ بِخَصْلَةٍ مِنْ خَصَالِ الْخَيْرِ كَانَ كَمَنْ أَدَى فَرِيضَةً فِيمَا سِوَاهُ، وَمَنْ أَدَى فِيهِ فَرِيضَةً كَانَ كَمَنْ أَدَى سَبْعِينَ فَرِيضَةً فِيمَا سِوَاهُ۔

"जो इस महीने में किसी भलाई के कार्य में संलग्न होता है, वह ऐसा है जैसे उसने अन्य दिनों में एक फर्ज अदा किया हो, और जिसने इस महीने में एक फर्ज अदा किया, वह ऐसा है जैसे उसने अन्य दिनों में सत्तर फर्ज अदा

किए।"

तथा इस कारण भी कि सहीह हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि :

«عُمَرَةُ فِي رَمَضَانَ تَعْدِلُ حَجَّةً، أَوْ قَالَ: حَجَّةً مَعِي».

"रमज्जान का एक उमरा एक हज के बराबर है, अथवा कहा: मेरे साथ किए गए एक हज के बराबर है।"

इस पवित्र महीने में भलाई के कार्यों में प्रतिस्पर्धा और नेकी के विभिन्न प्रकारों की ओर अग्रसर होने की वैधता पर आधारित हदीसें और आसार (प्रमाण) अत्यधिक हैं।

अल्लाह से हमारी दुआ है कि वह हमें और सभी मुसलमानों को अपनी रजा एवं प्रसन्नता के कामों की तौफीक दे, हमारे रोज़ों और तरावीह की नमाज़ को स्वीकार कर ले, हमारे हालात सुधार दे, और हमें हर प्रकार के गुमराह करने वाले फितनों से सुरक्षित रखें। साथ ही, हम उससे दुआ करते हैं कि वह मुसलमानों के नेताओं का सुधार करे, और उन्हें हक पर एकजुट कर दे, निस्संदेह वही इसका संरक्षक और इसका सामर्थ्य रखने वाला है।

वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु (आप पर सलामती, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों।)

\*\*\*

## सूची

पहली पुस्तिका: ज्ञकात पर महत्वपूर्ण शोध के संबंध में.....	2
दूसरी पुस्तिका: रमजान के रोजे एवं कियामुल्लैल (रात में जाग कर नमाज पढ़ने) की प्रधानता के संबंध में तथा साथ में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण नियमों का उल्लेख, जो कई लोगों पर छिप हो सकते हैं .....	14

\*\*\*



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## हरमैन का संदेश

मस्जिद -ए- हुराम एवं मस्जिद -ए- नबवी के आगंतुकों के लिए मार्गदर्शक  
सामग्री विभिन्न भाषाओं में



978-603-517-103-8